

سُورَةُ قَافٍ

Surah 50 — Qaaf (The letter Qaaf) · Meccan · 45 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ قَافٍ وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ

क्राफ़ कुरान मजीद की कसम (मोहम्मद पैग़म्बर हैं)

2

بَلْ عَجَبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكَافِرُونَ هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ

लेकिन इन (काफ़िरों) को ताज्जुब है कि उन ही में एक (अज़ाब से) डराने वाला (पैग़म्बर) उनके पास आ गया तो कुफ़्कार कहने लगे ये तो एक अजीब बात है

3

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا إِنْ أَرْسَلْنَا إِلَيْكُم مَّاءً فَاصْبًا فَاصْبًا

भला जब हम मर जाएँगे और (सड़ गल कर) मिट्टी हो जाएँगे तो फिर ये दोबार ज़िन्दा होना (अक्ल से) बर्इद (बात है)

4

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِندَنَا كِتَابٌ حَفِيفٌ

उनके जिस्मों से ज़मीन जिस चीज़ को (खा खा कर) कम करती है वह हमको मालूम है और हमारे पास तो तहरीरी याददाश्त किताब लौहे महफूज़ मौजूद है

5

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَّرِيجٍ

मगर जब उनके पास दीन (हक़) आ पहुँचा तो उन्होंने उसे झुठलाया तो वह लोग एक ऐसी बात में उलझे हुए हैं जिसे करार नहीं

6

أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ

तो क्या इन लोगों ने अपने ऊपर आसमान की नज़र नहीं की कि हमने उसको क्यों कर बनाया और उसको कैसी ज़ीनत दी और उनसे कहीं शिगाफ़्त तक नहीं

7

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوْسِيَ وَأَنذَرْنَا بِئْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ

और ज़मीन को हमने फैलाया और उस पर बोझाल पहाड़ रख दिये और इसमें हर तरह की खुशनुमा चीज़ें उगाई ताकि तमाम रूजू लाने वाले

8

تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ

(बन्दे) हिदायत और इबरत हासिल करें

9

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبْرَكًا فَأَنبَتْنَا بِهِ جَنَّاتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ

और हमने आसमान से बरकत वाला पानी बरसाया तो उससे बाग (के दरख्त) उगाए और खेती का अनाज और लम्बी लम्बी खजूरें

10

وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ لِّهَا طَلْعٌ نَّخِيدٌ

जिसका बौर बाहम गुथा हुआ है

11

رَزَقًا لِّلْعِبَادِ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَلِكَ الْخُرُوجُ

(ये सब कुछ) बन्दों की रोज़ी देने के लिए (पैदा किया) और पानी ही से हमने मुर्दा शहर (उफ़तादा ज़मीन) को ज़िन्दा किया

12

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ

इसी तरह (क़यामत में मुर्दों को) निकलना होगा उनसे पहले नूह की क़ौम और खन्दक वालों और (क़ौम) समूद ने अपने अपने पैग़म्बरों को झुठलाया

13

وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ

और (क़ौम) आद और फिरऔन और लूत की क़ौम

وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلُّ ۚ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ

और बन के रहने वालों (क्रौम शुऐब) और तुब्बा की क्रौम और (उन) सबने अपने (अपने) पैग़म्बरों को झुठलाया तो हमारा (अज़ाब का) वायदा पूरा हो कर रहा

أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ ۚ مِّنْ خَلْقٍ ۚ جَدِيدٍ ۚ

तो क्या हम पहली बार पैदा करके थक गये हैं (हरगिज़ नहीं) मगर ये लोग अज़ सरे नौ (दोबारा) पैदा करने की निस्वत शक़ में पड़े हैं

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ ۚ نَفْسُهُ ۚ ۚ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ

और बेशक हम ही ने इन्सान को पैदा किया और जो ख्यालात उसके दिल में गुज़रते हैं हम उनको जानते हैं और हम तो उसकी शहरग से भी ज्यादा करीब हैं

إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ۚ

जब (वह कोई काम करता है तो) दो लिखने वाले (केरामन क़ातेबीन) जो उसके दाहिने बाएं बैठे हैं लिख लेते हैं

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ۚ

कोई बात उसकी ज़बान पर नहीं आती मगर एक निगेहबान उसके पास तैयार रहता है

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۚ ۚ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ

मौत की बेहोशी यक़ीनन तारी होगी (जो हम बता देंगे कि) यही तो वह (हालात है) जिससे तू भागा करता था

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ۚ ذَلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ

और सूर फूँका जाएगा यही (अज़ाब) के वायदे का दिन है और हर शख़्स (हमारे सामने) (इस तरह) हाज़िर होगा

21

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ ۖ وَشَهِيدٌ ۚ

कि उसके साथ एक (फरिश्ता) हँका लाने वाला होगा

22

لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ ۚ مِّنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۚ

और एक (आमाल का) गवाह उससे कहा जाएगा कि उस (दिन) से तू ग़फ़लत में पड़ा था तो अब हमने तेरे सामने से पर्दे को हटा दिया तो आज तेरी निगाह बड़ी तेज़ है

23

وَقَالَ قَرِينُهُ ۚ هَٰذَا مَا لَدَىٰ عَتِيدٍ

और उसका साथी (फरिश्ता) कहेगा ये (उसका अमल) जो मेरे पास है

24

أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۚ

(तब हुक्म होगा कि) तुम दोनों हर सरकश नाशुके को दोज़ख में डाल दो

25

مَّنَاعٍ ۚ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ ۚ مُّرِيبٍ

जो (वाजिब हुक्क से) माल में बुख्त करने वाला हद से बढ़ने वाला (दीन में) शक करने वाला था

26

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا ءَاخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ

जिसने खुदा के साथ दूसरे माबूद बना रखे थे तो अब तुम दोनों इसको सख्त अज़ाब में डाल ही दो

27

ۚ قَالَ قَرِينُهُ ۚ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ ۚ وَلَكِنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ ۚ بَعِيدٍ ۚ

(उस वक्त) उसका साथी (शैतान) कहेगा परवरदिगार हमने इसको गुमराह नहीं किया था बल्कि ये तो खुद सख्त गुमराही में मुब्तिला था

28

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا ۚ لَدَىٰ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُمْ بِالْوَعِيدِ

इस पर खुदा फ़रमाएगा हमारे सामने झगड़े न करो मैं तो तुम लोगों को पहले ही (अज़ाब से) डरा चुका था

29

مَا يُبَدِّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَمٍ ۚ لِلْعَبِيدِ

मेरे यहाँ बात बदला नहीं करती और न मैं बन्दों पर (ज़र्रा बराबर) ज़ुल्म करने वाला हूँ

30

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأَتْ وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَّزِيدٍ ۚ

उस दिन हम दोज़ख़ से पूछेंगे कि तू भर चुकी और वह कहेगी क्या कुछ और भी हैं

31

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ

और बेहिश्त परहेज़गारों के बिलकुल करीब कर दी जाएगी

32

هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ۚ

यही तो वह बेहिश्त है जिसका तुममें से हर एक (खुदा की तरफ़) रूजू करने वाले (हुदूद की) हिफाज़त करने वाले से वायदा किया जाता है

33

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ

तो जो शरख़ खुदा से बे देखे डरता रहा और खुदा की तरफ़ रूजू करने वाला दिल लेकर आया

34

أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۚ ۚ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ

(उसको हुक्म होगा कि) इसमें सही सलामत दाखिल हो जाओ यहीं तो हमेशा रहने का दिन है

35

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۚ

इसमें ये लोग जो चाहेंगे उनके लिए हाज़िर है और हमारे यहाँ तो इससे भी ज्यादा है

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا ۖ فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن مَّحِيصٍ

और हमने तो इनसे पहले कितनी उम्मतें हलाक कर डाली जो इनसे कूवत में कहीं बढ़ कर थीं तो उन लोगों ने (मौत के खौफ से) तमाम शहरों को छान मारा कि भला कहीं भी भागने का ठिकाना है

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرٍ لِّمَن كَانَ لَهُ ۖ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۚ

इसमें शक नहीं कि जो शरूश (आगाह) दिल रखता है या कान लगाकर हुज़ूरे क़ल्ब से सुनता है उसके लिए इसमें (काफ़ी) नसीहत है

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۚ وَمَا مَسَّنَا مِنَ لُّغُوبٍ ۚ

और हमने ही यक़ीनन सारे आसमान और ज़मीन और जो कुछ उन दोनों के बीच में है छह : दिन में पैदा किए और थकान तो हमको छुकर भी नहीं गयी

فَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ

तो (ऐ रसूल) जो कुछ ये (काफ़िर) लोग किया करते हैं उस पर तुम सब्र करो और आफ़ताब के निकलने से पहले अपने परवरदिगार के हम्द की तस्बीह किया करो

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَرَ السُّجُودِ

और थोड़ी देर रात को भी और नमाज़ के बाद भी उसकी तस्बीह करो

وَأَسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ ۚ قَرِيبٍ ۚ

और कान लगा कर सुन रखो कि जिस दिन पुकारने वाला (इसराफ़ील) नज़दीक ही जगह से आवाज़ देगा

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ۚ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ

(कि उठो) जिस दिन लोग एक सख्त चीख को बाखूबी सुन लेंगे वही दिन (लोगों) के कब्रों से निकलने का होगा

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي ۖ وَنُمِيتُ ۖ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ

बेशक हम ही (लोगों को) ज़िन्दा करते हैं और हम ही मारते हैं

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۖ ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۖ

और हमारी ही तरफ फिर कर आना है जिस दिन ज़मीन (उनके ऊपर से) फट जाएगी और ये झट पट निकल खड़े होंगे ये उठाना और जमा करना

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۖ فَذَكَرَ بِالْقُرْءَانِ مَنْ يَخَافُ

وَعِيدِ

और हम पर बहुत आसान है (ऐ रसूल) ये लोग जो कुछ कहते हैं हम (उसे) खूब जानते हैं और तुम उन पर जबर तो देते नहीं हो तो जो हमारे (अज़ाब के) वायदे से डरे उसको तुम कुरान के ज़रिए नसीहत करते रहो